पाठ्यक्रम (पी.जी.टी. भर्ती परीक्षा के लिए)
विषय - हिंदी

(I) हिंदी भाषा एवं भाषा विज्ञान

1 क. भाषा: परिभाषा तथा प्रकृति

ख. भाषा के विविध रूप: बोली, उपबोली, मातृभाषा, राज्यभाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा और अन्तर्राष्ट्रीय भाषा

2. ध्वनि विज्ञान :

ध्वनि की उत्पत्ति प्रक्रिया, ध्वनि यंत्र, ध्वनि के प्रकार, स्वर तथा व्यंजन, स्वरों का वर्गीकरण, व्यंजनों का वर्गीकरण

3. भाषा परिवार : भाषा परिवार से अभिप्राय

आर्य परिवार की भाषाएँ- वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, अपभ्रंश की ध्वनियाँ एवं रूप संरचना

4. अर्थ विज्ञान :

क. शब्दों के अर्थों का अध्ययन

ख. शब्दार्थ संबंध

ग. अर्थबोध के साधन

घ. अनेकार्थी शब्दों के अर्थ निर्णय का आधार

5. हिंदी भाषा का अध्ययन:

क. हिंदी का स्वरूप परिचय, हिंदी की उपभाषाएं, उपभाषाओं की बोलियों का सामान्य परिचय, पश्चिमी हिंदी तथा पूर्वी हिंदी

ख. अवधी भाषा का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास एवं संरचना

ग. ब्रज भाषा का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास एवं संरचना

6. मानक हिंदी :

क. मानक हिंदी और खड़ी बोली में अंतर

ख. मानक हिंदी की ध्वनियाँ

ग. मानक हिंदी में शब्द भंडार एवं उसके विविध रूप

घ. मानक हिंदी की रूप संरचना- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण, उपसर्ग, प्रत्यय, अव्यय, कारक, संधि एवं समास

ङ. मानक हिंदी की वाक्य संरचना - वाक्य की परिभाषा, वाक्य के प्रकार

च. हिंदी : राजभाषा के रूप में

7. देवनागरी लिपि :

क. देवनागरी लिपि का उद्भव व विकास

ख. देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता और महत्व

ग. देवनागरी लिपि के दोष, दोष का सुधार एवं दोष सुधार के लिए किए गए प्रयास

घ. देवनागरी लिपि का मानक रूप तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण

(II) हिंदी साहित्य

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास-काल-विभाजन, सीमा निर्धारण और नामकरण

क. आदिकाल- आदि काल की पृष्ठभूमि, सिद्ध एवं नाथ साहित्य, रासो काव्य, जैन साहित्य, लौकिक साहित्य,आदिकाल की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, काव्यधाराएँ, प्रतिनिधि रचनाकार - सरहपा,चन्दबरदाई, अमीर खुसरो,विद्यापति,नरपति नाल्ह

ख. मध्यकाल :

- भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भक्ति आंदोलन, विभिन्न काव्य धाराएँ - संतकाव्य-प्रमुख संत कवि और उनका योगदान, सूफी काव्य-प्रमुख कवि और उनका योगदान, राम व कृष्ण काव्य - प्रतिनिधि कवि और रचनागत वैशिष्ट्य, निर्गुण व सगुण धारा,प्रमुख कवि :, कबीर, सूरदास, तुलसीदास, रसखान, रैदास, मीराबाई, जायसी,और रहीम ।

- रीतिकाल-नामकरण, परिस्थितियाँ, प्रवृत्तियाँ, विभिन्न धाराएँ, प्रतिनिधि कवि व रचनाएँ, सामाजिक- सांस्कृतिक पृष्ठभूमि,प्रमुख कवि-केशव, बिहारी, घनानन्द, भूषण, मतिराम, देव, सेनापति, पद्माकर

ग. आधुनिक काल :

- आधुनिक काल की पृष्ठभूमि, नामकरण, काल विभाजन, विशिष्टताएँ, आधुनिक काल व नवजागरण
- **भारतेन्दु युग,** प्रमुख साहित्यकार-भारतेंदु हरिश्चंद्र (रचनाएँ और विशेषताएँ)
- **द्विवेदी युग,** प्रमुख साहित्यकार-महावीर प्रसाद द्विवेदी, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध,मैथिलीशरण गुप्त (रचनाएँ और विशेषताएँ)
- **छायावादी काव्य,** प्रमुख साहित्यकार-जयशंकर प्रसाद,माखनलाल चतुर्वेदी, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला सुमित्रानंदन पंत महादेवी वर्मा (रचनाएँ और विशेषताएँ)
- **उत्तर-छायावादी काव्य** की विशेषताएँ, **प्रगतिवाद**(केदारनाथ अग्रवाल,सुभद्रा कुमारी चौहान,नागार्जुन, शमशेर, भवानी प्रसाद मिश्र, मुक्तिबोध), **प्रयोगवाद और नई कविता** -प्रमुख साहित्यकार-अज्ञेय, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय, विजयदेव नारायण साही और जगदीश गुप्त (रचनाएँ और विशेषताएँ), **समकालीन कविता**(अशोक वाजपेयी ,अरुण कमल, आलोक धन्वा, लीलाधर जगूड़ी, वेणुगोपाल, अनामिका, अनुज लुगुन, नंद चतुर्वेदी और हरीश भादानी) (रचनाएँ और विशेषताएँ)

2. हिन्दी गद्य का उद्‌गम व विकास

क. कहानी विधा का विकास - प्रमुख कहानीकार- जयशंकर प्रसाद, मुंशी प्रेमचंद, कमलेश्वर, जैनेंद्र कुमार, सुदर्शन

ख. उपन्यास विधा का विकास - प्रमुख उपन्यासकार-मुंशी प्रेमचंद, अज्ञेय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, फणीश्वर नाथ रेणु, यशपाल, भीष्म साहनी, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, लाला श्रीनिवास दास, अमृतलाल नागर

ग. नाटक विधा का विकास - प्रमुख नाटककार-भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश, उपेंद्रनाथ अश्क, डॉ० लक्ष्मी नारायण लाल, हरिकृष्ण प्रेमी, जगदीशचंद्र, विष्णु प्रभाकर, धर्मवीर भारती (गीति-नाट्य साहित्य में प्रमुख)

घ. निबन्ध विधा का विकास - प्रमुख निबंधकार-रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, बाबू गुलाबराय,रामधारी सिंह दिनकर, हरिशंकर परसाई

ङ हिंदी आलोचना का विकास - प्रमुख आलोचक- रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा, नामवर सिंह

च. नव्यतर विधाओं का विकास

छ. हिंदी पत्रकारिता का विकास

ज. हिंदी का प्रवासी साहित्य - अवधारणा एवं प्रमुख साहित्यकार

3. काव्य शास्त्र :

➢ भारतीय काव्य शास्त्र के सिद्धांत

क. काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य के प्रकार

ख. रस सिद्धान्त: रस का स्वरूप, रस निष्पति, रस के अंग, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा ।

ग. अलंकार सिद्धान्त : मूल स्थापनाएँ अलंकारों का वर्गीकरण

घ. रीति सिद्धान्त : रीति की अवधारणा, काव्य-गुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ

ङ. वक्रोक्ति सिद्धान्त : वक्रोक्ति की अवधारणा एवं वक्रोक्ति के भेद

च. ध्वनि-सिद्धान्त: ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ

छ. औचित्य सिद्धान्त : प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद

➢ पाश्चात्य काव्यशास्त्र एवं समकालीन आलोचना सिद्धान्त

1. क. प्लेटो : आदर्शवाद

ख. अरस्तु : अनुकरण सिद्धांत और विरेचन सिद्धांत

ग. होरेस : औचित्य सिद्धांत

घ. लोंजाइनस : उदात्त सिद्धांत

ङ. टी.एस.इलियट : परम्परा एवं वैयक्तिक प्रज्ञा का सिद्धांत

च. आई.ए. रिचर्ड्स : मूल्य सिद्धांत

छ. कॉलरिज: कल्पना एवं फैंटसी

2. क. मार्क्सवाद

ख. मनोविश्लेषणवाद

ग.अस्तित्ववाद

घ. शैलीविज्ञान

ङ संरचनावाद और उत्तर आधुनिकतावाद

च.अस्मितामूलक विमर्श(नारी,दलित,आदिवासी एवं अल्पसंख्यक)

****